अध्याय 31

परमेश्वर के निर्देशों का सारांश

मूसा का परमेश्वर के साथ सीनै पर्वत पर भेंट के साथ ही इकतीसवाँ अध्याय समाप्त होता है। परमेश्वर ने मूसा को यह संकेत देते हुए कि बसलेल और ओहोलीआब के देख रेख में मिलापवाले तम्बू का निर्माण किया जाएगा, व्यवस्था देना समाप्त किया (31:1-6)। उसने क्या बनाया जाना चाहिए का समीक्षा किया (31:7-11) और मूसा को स्मरण दिलाया कि इस्राएलियों को विश्रामदिन मनाना होगा (31:12-17)। इस संदेश का सारांश इन शब्दों में दर्शाया गया है कि जब वह मूसा से "बातें कर चुका" और "तब उसने उसको अपनी उंगली से लिखे हुए साक्षी देनेवाले पत्थर की दोनों तख़्तियाँ दीं" (31:18)। बत्तीसवें अध्याय में अंकित पाप के बारे में यहोवा और कहना चाहता था लेकिन आरंभिक प्रकाशन समाप्त हो चुका था।

कारीगर और निर्माण योजना (31:1-11)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"सुन, मैं ऊरी के पुत्र बसलेल को, जो हूर का पोता और यहूदा के गोत्र का है, नाम लेकर बुलाता हूँ। [3]और मैं उसको परमेश्वर के आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान, और सब प्रकार के कार्यों की समझ देनेवाला आत्मा है, परिपूर्ण करता हूँ, [4]जिससे वह कारीगरी के कार्य बुद्धि से निकाल निकालकर सब भाँति की बनावट में, अर्थात् सोने, चाँदी, और पीतल में, [5]और जड़ने के लिये मणि काटने में, और लकड़ी पर नक्काशी का काम करे। [6]और सुन, मैं दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब को उसके संग कर देता हूँ; वरन् जितने बुद्धिमान हैं उन सभों के हृदय में मैं बुद्धि देता हूँ, जिससे जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं ने तुझे दी है उन सभों को वे बनाएँ; [7]अर्थात् मिलापवाला तम्बू, और साक्षीपत्र का सन्दूक और उस पर का प्रायश्चित्तवाला ढकना और तम्बू का सारा सामान, [8]और सामान सहित मेज, और सारे सामान समेत चोखे सोने की दीवट, और धूपवेदी, [9]और सारे सामान सहित होमवेदी, और पाए समेत हौदी, [10]और काढ़े हुए वस्त्र, और हारून याजक के याजकवाले काम के पवित्र वस्त्र, और उसके पुत्रों के वस्त्र, [11]और अभिषेक का तेल, और पवित्रस्थान के लिये सुगन्धित धूप, इन सभों को वे उन सब आज्ञाओं के अनुसार बनाएँ जो मैं ने तुझे दी हैं।"

आयतें 1, 2. मिलापवाले तम्बू का निर्माण की योजना के साथ ही परमेश्वर ने

बसलेल को निर्माण कार्य की देख रेख के लिए नियुक्त किया। वह मूसा का एक सहायक, **हूर** का पोता था (17:10; 24:14)। वह **यहूदा का गोत्र** का था।

आयत 3. बसलेल इस कार्य के योग्य था, क्योंकि वह **परमेश्वर के आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान, और सब प्रकार के कार्यों की समझ देनेवाला आत्मा है, से परिपूर्ण करता था।** दूसरे शब्दों में, बसलेल इस योजना की देख रेख की प्रवीणता से परिपूर्ण था और उसको यह इसलिए मिला क्योंकि यह उसे परमेश्वर से प्राप्त था।

आर. ऐलेन कोल ने लिखा, "पुराने नियम के आरंभिक दिनों में, हर प्रकार का कौशल और सामर्थ और उत्कृष्टता का श्रेय सीधे रूप से 'परमेश्वर की आत्मा' को दिया जाता था। यह इसलिए ऐसा माना जाता था क्योंकि परमेश्वर ही समस्त बुद्धि का स्रोत माना जाता था।"[1] एस. आर. ड्राइवर के अनुसार परमेश्वर की आत्मा को "[पुराने नियम] में *विशिष्ट* सामर्थ या मनुष्य की गतिविधि के साथ ही अलौकिक आत्मिक वरदान का स्रोत माना गया है" और इसके साथ ही उन्होंने यह कहा है कि यहाँ इस वक्तव्य का अर्थ "असाधारण *कलात्मक* क्षमता" है।[2] जे. फिलिप ह्यात ने "आत्मा" को "परमेश्वर से निकलने वाली सामर्थ" के रूप में परिभाषित किया है।[3]

आयतें 4, 5. बसलेल के क्षमता में **कारीगरी के कार्य** सम्मिलित था जिसमें भांति-भांति की बनावट में बहुमूल्य धातु (**सोना**, **चांदी**, और **पीतल**), **मणि काटने** में, और **लकड़ी के खोदने** के काम सम्मिलित था। यह सूची उसको परमेश्वर द्वारा दिया गया कई कार्य कौशल का सारांश प्रस्तुत करता है। उसके क्षमता का विस्तृत विश्लेषण **सब प्रकार के कार्य** वाक्यांश से स्पष्ट होता है (31:3, 5)।

आयत 6. बसलेल का सहायक **दान के गोत्र वाले ... ओहोलीआब** था। बहुधा उसका वर्णन बसलेल के साथ किया गया है (35:30, 34; 36:1, 2; 38:22, 23), लेकिन वह सदैव बसलेल का सहायक कहा गया है। लेकिन इसके साथ ही पाठ अन्य कारीगरों का वर्णन करता है जिनको परमेश्वर ने विशेष कार्य **कौशल** की क्षमता प्रदान किया था। बसलेल और ओहोलीआब को कार्य स्वयं नहीं करना था, क्योंकि परमेश्वर ने अन्य लोगों को उनकी सहायता करने के लिए आवश्यक कार्य कौशल की क्षमता प्रदान की थी। पाठ इस बात पर जोर देता है कि इन कारीगरों को जो भी कार्य कौशल प्राप्त था, वह उन्हें परमेश्वर से मिला था। किसी ने कहा, "जहाँ परमेश्वर ले जाता है, वहाँ वह प्रबंध करता है।" मिलापवाले तम्बू बनाने के लिए, परमेश्वर ने मूसा को निर्देशित किया और इसे बनाने के लिए उसने कारीगरों को उपलब्ध किया।

आयतें 7-11. मिलापवाले तम्बू बनाने के संबंध में यहोवा का निर्देश इस सारांश के साथ समाप्त होता है कि कारीगरों को क्या बनाना था। इसे बनाने के लिए पिछले छः अध्यायों में जितनी वस्तुओं का विश्लेषण किया गया है लगभग उन सब वस्तुओं का वर्णन इस अध्याय में किया गया है। इस अनुच्छेद का उद्देश्य यह था कि मूसा कारीगरों पर यह प्रभाव जमा सके कि उनको वे सभी चीजें बनानी थी जिसकी **आज्ञा** यहोवा ने उन्हें दी थी। यह बात इस पर जोर देने के लिए

दोहराया गया है (31:6, 11)।

निर्देश (अध्याय 25-30)	सारांश (अध्याय 31)
वाचा का संदूक (25:10-16)	वाचा का संदूक (31:7)
प्रायश्चित्त वाला ढकना (25:17-22)	प्रायश्चित्त वाला ढकना (31:7)
भेंट की रोटियों वाला मेज (25:23-30)	मेज (31:8)
सोने की दीवट (25:31-39)	सोने की दीवट (31:8)
तम्बू (26:1-30)	मिलापवाला तम्बू (31:7)
परदा (26:31-35)	————
परदा (26:36, 37)	————
पीतल की वेदी (27:1-8)	धूप जलाने की वेदी (31:9)
आंगन (27:9-19)	————
दीवट के लिए तेल (27:20, 21)	————
याजकों के वस्त्र (28:1-43)	याजकों के वस्त्र (31:10)
धूप जलाने की वेदी (30:1-10)	धूप जलाने की वेदी (31:8)
पीतल की हौदी (30:17-21)	हौदी (31:9)
अभिषेक का तेल (30:22-33)	अभिषेक का तेल (31:11)
सुगन्धित द्रव्य (30:34-38)	सुगन्धित द्रव्य (31:11)

विश्राम दिन की आज्ञा दोहराया जाना (31:12-17)

12फिर यहोवा ने मूसा से कहा, 13"तू इस्राएलियों से यह भी कहना, 'निश्चय तुम मेरे विश्रामदिनों को मानना, क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे और तुम लोगों के बीच यह एक चिह्न ठहरा है, जिससे तुम यह बात जान रखो कि यहोवा हमारा पवित्र करनेहारा है। 14इस कारण तुम विश्रामदिन को मानना, क्योंकि वह तुम्हारे लिये पवित्र ठहरा है; जो उसको अपवित्र करे वह निश्चय मार डाला जाए: जो कोई उस दिन में कुछ काम-काज करे वह प्राणी अपने लोगों के बीच से नष्ट किया जाए। 15छ: दिन तो काम-काज किया जाए, पर सातवाँ दिन परमविश्राम का दिन और यहोवा के लिये पवित्र है; इसलिये जो कोई विश्राम के दिन में कुछ काम-काज करे वह निश्चय मार डाला जाए। 16इसलिये इस्राएली विश्रामदिन को माना करें, वरन्

पीढ़ी पीढ़ी में उसको सदा की वाचा का विषय जानकर माना करें। 17वह मेरे और इस्राएलियों के बीच सदा एक चिह्न रहेगा, क्योंकि छ: दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, और सातवें दिन विश्राम करके अपना जी ठण्डा किया'।"

पर्वत पर मूसा को परमेश्वर का संदेश समाप्त होने से पहले, परमेश्वर ने विश्रामदिन मनाने की आज्ञा दोबारा दी। इससे पहले यह मन्ना उपलब्ध कराए जाने (16:22-30) और दस आज्ञाओं में एक आज्ञा के संदर्भ में दिया गया था (20:8-11)। यह वाचा के पुस्तक की अंत की ओर दोहराया गया है (23:12)। निर्गमन की पुस्तक समाप्त होने से पूर्व दो बार और विश्रामदिन के संबंध में आज्ञा दी गई है (34:21; 35:1-3)।

कोई भी निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता है कि इससे पहले मूसा पर्वत से नीचे उतरता उसे विश्रामदिन की आज्ञा क्यों दी गई, लेकिन इसके लिए कम से कम दो संभावनाएं जताई जाती है। हो सकता है कि इस पूरे अनुभाग में इस आज्ञा का दोहराना उचित ठहरता है। क्योंकि विश्रामदिन का संबंध नैतिक व्यवहारों से ज्यादा धार्मिक संस्कारों से है, तो इस आज्ञा की समानता मिलापवाले तम्बू और याजकों के सेवाओं से अधिक मिलता जुलता है। जॉन आई. दुरहैम ने लिखा,

> [विश्रामदिन का निर्देश] आराधना से संबंधित सभी निर्देशों के श्रृंखला का सारांश प्रस्तुत करने के उद्देश्य से लिखा गया है, यह एक ऐसा सारांश है जो आराधना में यहोवा की उपस्थिति पर ध्यान रोकने के महत्व को बताता है, जिसमें दैनिक रूप से यहोवा की उपस्थिति का आदर करना है।[4]

दूसरी संभावना यह है कि क्योंकि संदर्भ मिलापवाले तम्बू बनाने का है, तो लोगों को यह स्मरण दिलाना था कि उन्हें विश्रामदिन में कार्य नहीं करना है - यहां तक उन्हें मिलापवाले तम्बू में कार्य करने की अनुमति नहीं थी।[5]

आयतें 12, 13. विश्रामदिन यहोवा और **इस्राएलियों** के बीच एक चिह्न था (31:13, 17); यह वाचा का एक चिह्न था जिसे परमेश्वर ने इस्राएलियों के साथ बांधा था। जिस तरह मेघ धनुष नूह के साथ बांधे गए वाचा का चिह्न था और खतना अब्राहम के साथ बांधे गए वाचा का चिह्न था, तो विश्रामदिन मनाना मूसा के साथ बांधे गए वाचा का चिह्न था। जब तक इस्राएली लोग इस वाचा से बंधे रहते, तो वे इसका गवाह ठहरते कि ये परमेश्वर के वे लोग हैं जिनको उसने मिस्र की दासता से स्वतंत्र किया था (व्यव. 5:12-15)।

आयत 14. विश्रामदिन न मानने का दण्ड **मृत्यु** था। इस अनुच्छेद में पहली बार यह दर्शाया गया है कि विश्रामदिन न मानने का परिणाम मृत्युदण्ड है। यह 35:2 में दोहराया गया है और इसका विश्लेषण गिनती 15 में किया गया है। परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग यह जाने कि कोई भी उसके व्यवस्था का अवमानना बिना दण्ड पाए नहीं कर सकता है।

इस अवतरण में "मार डाला जाए" **अपने लोगों के बीच में से नाश किया जाए** के बदले प्रयोग किया गया है। इसलिए, स्पष्ट रूप से "नाश किया जाए," "मार

डाला जाए" के समानांतर प्रयोग किया गया है। यद्यपि कुछ विद्वान इन दोनों दण्डों के बीच विभेद करते हैं, वे यह कहते हैं कि "नाश किया जाए" का तात्पर्य समाज से बहिष्कृत करना है। यदि इन दोनों दण्डों में भिन्नता है, तो यह दण्ड परिस्थिति पर आधारित था (उदाहरण के लिए, क्या जानबूझकर पाप किया गया है)।[6]

आयत 15. विश्रामदिन की व्यवस्था **सम्पूर्ण विश्राम** की मांग करती है। विश्रामदिन पवित्र होना चाहिए था या इसे हफ्ते के अन्य दिनों से अलग करना चाहिए था, जिसमें इस्राएलियों को **किसी भी प्रकार का कार्य** नहीं करना चाहिए था।

आयतें 16, 17. विश्रामदिन मूसा के दिनों तक मनाया जाना चाहिए था: **पीढ़ी पीढ़ी में उसको सदा की वाचा का विषय जानकर माना करें**। परमेश्वर ने कहा, **"[यह] मेरे और इस्राएलियों के बीच सदा एक चिह्न रहेगा।"** इन आयतों से कोई भी इसका यह अर्थ निकाल सकता है कि विश्रामदिन मनाना युगांत तक जारी रहना चाहिए और इसलिए आज भी इसको मनाया जाना चाहिए। परंतु, दो तथ्य हमें स्मरण रखने चाहिए। सर्वप्रथम, परमेश्वर ने विश्रामदिन मनाने के बारे में केवल इस्राएलियों के साथ एक वाचा के रूप में कहा। यदि यह नियम अभी भी कारगर है तो यह इस्राएलियों पर ही लागू होता है। मसीह के आने के कारण, पुरानी वाचा प्रभावहीन हो गई है। दूसरी बात, पुराने नियम का "सदा" (עוֹלָם, *'ओलाम)* शब्द का तात्पर्य "अनंतता से" या "युगांत" से नहीं है। हारून का याजक पद "सदाकाल का नियम" के रूप में स्थापित किया गया है (29:9)। इस प्रकार का अवतरण यह स्पष्ट करता है कि "सदा," "तुम्हारे पीढ़ी में," "सदाकाल का नियम" जैसे अभिव्यक्ति का तात्पर्य "जब तक यह पीढ़ी है" से है। मूसा के समय तक, वाचा के लोग, इस्राएलियों को विश्रामदिन मनाना था।

परमेश्वर का अनुकरण करते हुए विश्रामदिन मनाना था, **क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, और सातवें दिन विश्राम करके अपना जी ठण्डा किया**। परमेश्वर का सातवें दिन विश्राम करना, विश्रामदिन मनाने का कारण ठहराया गया (20:11)। यह तथ्य कि इस्राएलियों को परमेश्वर के साथ एक संबंध के "चिह्न" के रूप में यहाँ "सातवें दिन को विश्राम करने के लिए कहा गया," पहले बताए गए तथ्य का विरोध नहीं करता है। यह एक दूसरे का अनुपूरक है और विरोधाभास नहीं है। यहोवा इस्राएल का सृष्टिकर्ता और छुड़ानेवाला था। इन दोनों कारणों से - क्योंकि उसने सृष्टि की रचना की और क्योंकि उसने इस्राएलियों को मिस्र की दासता से स्वतंत्र किया - उन्हें विश्रामदिन मनाना था (31:12, 13 की टिप्पणी देखें)।

यद्यपि कभी-कभी यह बार-बार दोहराना जैसे दिखाई देता है, लेकिन यह अवतरण जानबूझकर ABBA नमूना में संयोजित गया है:

A1: "निश्चय तुम मेरे विश्रामदिनों को मानना, क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे और तुम लोगों के बीच यह एक चिह्न ठहरा है, जिससे तुम यह बात जान रखो कि यहोवा हमारा पवित्र करनेहारा है" (31:13).

B1: "इस कारण तुम विश्रामदिन को मानना, क्योंकि वह तुम्हारे लिये पवित्र ठहरा है; जो उसको अपवित्र करे वह निश्चय मार डाला जाए: जो कोई उस दिन में कुछ काम-काज करे वह प्राणी अपने लोगों के बीच से नष्ट किया जाए" (31:14)।

B2: "सातवाँ दिन परमविश्राम का दिन और यहोवा के लिये पवित्र है; इसलिये जो कोई विश्राम के दिन में कुछ काम-काज करे वह निश्चय मार डाला जाए" (31:15)।

A2: "'इसलिये इस्राएली विश्रामदिन को माना करें, वरन् पीढ़ी पीढ़ी में उसको सदा की वाचा का विषय जानकर माना करें। वह मेरे और इस्राएलियों के बीच सदा एक चिह्न रहेगा, क्योंकि छ: दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, और सातवें दिन विश्राम करके अपना जी ठण्डा किया'" (31:16, 17)।

दो आयतें विश्रामदिन का नियम तोड़ने की परिणाम के बारे में बताती हैं। दूसरी आयत आदेश देती है, और यह बताती है यह कब तक प्रभावकारी रहेगा, और वह इसको मनाने का कारण भी बताती है।

व्यवस्था का सारांश (31:18)

18जब परमेश्वर मूसा से सीनै पर्वत पर ऐसी बातें कर चुका, तब उसने उसको अपनी उंगली से लिखी हुई साक्षी देनेवाली पत्थर की दोनों तख़्तियाँ दीं।

आयत 18. इस आयत के साथ ही **सीनै पर्वत** पर दी गई व्यवस्था समाप्त होती है। परमेश्वर द्वारा अपनी **उंगली** से **पत्थर की दोनों तख्तियों** पर व्यवस्था लिखने से यह इसे और अधिक प्रभावी बना देता है। मनुष्य स्वयं परमेश्वर द्वारा लिखी व्यवस्था का उल्लंघन करने का दुस्साहस नहीं करेगा!

स्पष्टतया, "दो तख्तियों" पर जो लिखा गया था वह दस आज्ञाएं थीं। मिलापवाले तम्बू और याजकों के वस्त्र से संबंधित व्यवस्था, मूसा ने या तो संस्मरण से या संभवतः पटिया में लिखकर पर्वत से नीचे लाया होगा। पटिया में लिखने की अधिक संभावना है क्योंकि मूसा ने पहले भी वाचा की पुस्तक को लिखा था (24:4)।

"परमेश्वर की उंगली" मानवरूपी भाषा है जिसमें परमेश्वर का मानवीय चरित्र प्रदर्शित होता है (15:8-10 की टिप्पणी देखें)। कुछ टीकाकार सोचते हैं कि "परमेश्वर की उंगली से लिखने" का तात्पर्य यह है कि जो लिखा गया था उसका स्रोत परमेश्वर है।[7] फिर भी, इस अनुभाग और 32:16 और 34:1 में परमेश्वर का लिखना इस बात पर जोर देता है कि वह व्यक्तिगत और अद्भुत रीति से इन "दस शब्दों" को पत्थर की पटिया में खोदने में संलग्न था।[8] इस अध्याय के अंत में मूसा पर्वत से नीचे उतरने के लिए तैयार था ताकि वह लोगों को परमेश्वर की व्यवस्था दे सके।

अनुप्रयोग

सर्वगुण सम्पन्न, बसलेल का परमेश्वर को अर्पण किया जाना (31:1-5)

क्या आप बसलेल जैसा किसी को जानते हैं? ऐसा लगता है कि यह व्यक्ति किसी भी वस्तु से किसी भी माध्यम में - "कलाकृति बना सकता था," पत्थर और लकड़ी भी तराश सकता था। वह "सब प्रकार की शिल्पकारी" में पारंगत था। क्योंकि परमेश्वर ने उसको मिलापवाले तम्बू बनाने के लिए प्रभारी नियुक्त किया था तो ऐसा जान पड़ता है कि वह एक अच्छा अगुवा और प्रबंधक था। परमेश्वर ने उसको सर्वगुण सम्पन्न किया था और इसी कार्य के लिए नियुक्त किया था। जैसे निर्गमन की पुस्तक में वर्णित किया गया है कि बसलेल के लिए सबसे अच्छी बात यह थी कि उसने इस कार्य को स्वीकार किया, इस कार्य के लिए उसने अपने आपको समर्पित किया, और जब तक कार्य पूरा नहीं हुआ उसने पीठ नहीं दिखाई। क्या आप किसी बहु गुण सम्पन्न व्यक्ति को जानते हैं? क्या आप उनमें से एक हैं? क्या आप जानते हैं कि ये सभी गुण परमेश्वर ही देता है? क्या आप उनको परमेश्वर की सेवा में प्रयोग करना चाहेंगे, क्या आप उस कार्य के लिए अपना समर्पण करेंगे, जो परमेश्वर आपको देता है - और तब तक आप पीठ नहीं दिखाएंगे जब तक कार्य सम्पन्न न हो जाए?

विश्रामदिन के बारे में क्या विचार है? (31:12-17)

मूसा की व्यवस्था की सभी आज्ञाओं में, विश्रामदिन की आज्ञा जैसा कोई आज्ञा विरोधाभास नहीं है। यह दस आज्ञाओं में से एक आज्ञा है (20:8-11; व्यव. 5:12-15)। इसकी महत्वत्ता को इस बात से ही आंका जा सकता है कि इसकी आज्ञा निर्गमन की पुस्तक में पाँच बार दी गई है (16:4, 5, 22-30; 23:12; 34:21; 35:1-3)। वस्तुतः, यह इतना महत्वपूर्ण था कि इस आज्ञा का उल्लंघन करने का परिणाम मृत्युदण्ड था (31:15; 35:2; गिनती 15:32-36)। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस्राएलियों को विश्रामदिन मनाना था। नये नियम के दिनों में भी यहूदी लोग विश्रामदिन की आज्ञा मानते थे और इसका आज भी आदर किया जाता है।

विरोधाभास प्रश्न यह है: क्या आज भी हमें विश्रामदिन मनाना चाहिए? यदि नहीं, तो क्या व्यवस्था में दी गई विश्रामदिन की आज्ञा का हमारे लिए कोई औचित्य है?

यह बाध्य होना नहीं है। कुछ मसीही लोग मानते हैं कि विश्रामदिन की आज्ञा आज भी यहूदी लोगों के समान हम पर लागू होती है। क्या उनकी विचारधारा ठीक है?

विश्रामदिन पुरानी व्यवस्था, मूसा की व्यवस्था का एक भाग है, जो पूरा हो चुका है। नया नियम हमें यह सिखाता है कि नये ने पुराने का स्थान ले लिया है (गला. 3:24, 25; इफि. 2:15; इब्रा. 7:11-22; 8:13; 9:11-28)। जो लोग विश्रामदिन मानते हैं वे यह आपत्ति जताते हैं कि व्यवस्था से केवल धार्मिक रीति

रिवाज़ हटा दिए गए हैं न कि दस आज्ञाएं। फिर भी, वे ऐसा भेद बताते हैं जिसका न तो पुराना नियम और न ही नया नियम भेद करता है। जब बाइबल व्यवस्था के बारे में कहती है, तो यह पूरी व्यवस्था के बारे में कहता है, चाहे वह धार्मिक रीति रिवाज़ हो या फिर नैतिक व्यवस्था हो। रोमियों 7:1-7 यह बताती है कि दस आज्ञाएं व्यवस्था का एक भाग हैं और वह यह भी कहता है कि मसीही लोग "व्यवस्था से छूट गए हैं।" इफिसियों 2:15 स्पष्ट करती है कि मसीह ने "व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं" मिटा दिया है। कोई भी "आज्ञा" को "विधियों" से अलग नहीं कर सकता है।

विश्रामदिन की आज्ञा सृष्टि के आरंभ से नहीं थी। जैसे कुछ लोग सिखाते हैं। हमें ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता है जिसमें मूसा के समय से पहले बापदादों ने इसको माना हो या फिर विश्रामदिन सभी युग के लोगों के लिए है, जो मूसा की व्यवस्था पर आधारित न हो। जबकि उत्पत्ति 2:3 यह कहता है कि परमेश्वर ने सातवें दिन को "आशीष" दी और उसे "पवित्र" ठहराया, यह स्पष्ट नहीं करता है कि ऐसा उसने *उस समय किया।* बल्कि, उत्पत्ति हमें यह बताता है कि जब विश्रामदिन की आज्ञा दी गई, तो विश्राम करने की आज्ञा परमेश्वर का सातवें दिन विश्राम करने पर आधारित है।

इस्राएलियों को विश्रामदिन की आज्ञा इस्राएल और परमेश्वर के बीच एक वाचा के चिह्न के रूप में दिया गया था और अन्य जातियों को नहीं दिया गया था। क्योंकि आज हम नई वाचा के अंतर्गत जीते हैं तो यह आज्ञा हम पर लागू नहीं होती है।

आराधना के लिए आदि कलीसिया को विश्रामदिन में एकत्रित होने की आवश्यकता नहीं थी। मसीही सुसमाचारकों ने विश्रामदिन में यहूदियों को सुसमाचार सुनाया, लेकिन उनका प्रचार वैसा नहीं था जैसा मसीही लोग विश्रामदिन में आराधना करते हैं। आराधना के लिए विश्रामदिन में एकत्रित होने के बजाय, मसीही लोग हफ्ते के प्रथम दिन जो मसीह का मृत्यु में से जी उठने का दिन है, आराधना करने लगे (प्रेरितों. 20:7; 1 कुरि. 16:1, 2)। यह दिन "प्रभु के दिन" के नाम से जाना जाने लगा (प्रका. 1:10), और इस दिन स्थानीय मसीही समाज प्रभु भोज मनाने के लिए एकत्रित होने लगा। कलीसिया के प्राचीनों के लेख से यह स्पष्ट है कि कलीसिया हफ्ते के प्रथम दिन आराधना के लिए एकत्रित होती थी। नये नियम में कोई ऐसी आज्ञा नहीं है जिसमें प्रभु के दिन में विश्राम करने के लिए कहा गया हो; इस दृष्टिकोण से, हफ्ते का प्रथम दिन यहूदियों के विश्रामदिन के समतुल्य नहीं है।

"मसीहियों का विश्रामदिन" सातवाँ दिन नहीं है बल्कि उनका विश्रामदिन तो स्वर्ग है। नये नियम में केवल इब्रानियों 4:9-11 में "विश्रामदिन" (या इसके समतुल्य) को मसीहियों के संबंध में प्रयोग किया गया है, जिसमें मसीही विश्रामदिन की पहचान स्वर्ग और उसमें प्रवेश करने के लिए की गई है।

स्मरण रखें। यदि हम विश्रामदिन नहीं मनाते हैं तो आज मसीही लोगों के लिए इसकी क्या महत्ता है? विश्रामदिन की आज्ञा हमें निम्नलिखित बातें स्मरण

दिलाती है:

1. स्मरण रखना। यहूदियों को प्रत्येक विश्रामदिन यह स्मरण दिलाया जाता था कि सृष्टि की रचना करते समय परमेश्वर ने क्या-क्या किया था। हमें भी यह स्मरण रखना चाहिए कि सृष्टि में, हमारा उद्धार करने में और प्रकाशन में परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है। इसको स्मरण रखने का एक माध्यम यह है कि प्रभु भोज में भाग लेने के लिए हम प्रभु के दिन में एकत्रित हों।

2. विश्राम करें। यीशु ने कहा, "सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है" (मरकुस 2:27)। इसका आशय यह है कि मनुष्य के लिए हफ्ते में एक दिन विश्राम करना अच्छा है। संभवतः हमें इस विचार को अंतर्निहित करना चाहिए; हमारी एक सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम अधिक कार्य करते हैं और थोड़ा विश्राम करते हैं।

3. दूसरों की आवश्यकता के प्रति सतर्क रहें। विश्रामदिन में केवल यहूदियों के लिए ही विश्राम करने का प्रावधान नहीं था बल्कि यह उन सबके लिए था जो उन पर निर्भर रहते थे - अर्थात् उनके दास और दासियां, वे परदेसी जो उनके बीच रहते थे, और यहाँ तक कि उनके जानवरों के लिए भी विश्राम का प्रावधान था (23:12; व्यव. 5:14)। ऐसा हो कि विश्रामदिन की आज्ञा हमें दूसरों के प्रति दयालु होने की भावना भी स्मरण दिलाये।

4. स्वर्ग में प्रवेश करने के अपने प्रयास को पुनः जीवित करें, उस "सब्त की विश्राम" के लिए प्रयास करें जो स्वर्ग में हमारा प्रतीक्षा कर रहा है (इब्रा. 4:9-11)।

विश्रामदिन: वाचा का "चिह्न" (31:13, 17)

विश्रामदिन, परमेश्वर और यहूदियों के बीच वाचा का एक "चिह्न" है। उस चिह्न के द्वारा, इस्राएलियों को लगातार यह स्मरण दिलाया जाता था कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या किया था। इसके साथ ही, विश्रामदिन इस्राएलियों को अन्य लोगों से अलग करता था; इस्राएली लोग, वाचा के मानने वाले लोग के रूप में जाने जाते थे। क्या परमेश्वर ने हमें इस युग में भी वाचा का कोई "चिह्न" जो उसने हमारे साथ बांधा है, प्रदान किया है? संभवतः बपतिस्मा और प्रभु भोज का अभ्यास नई वाचा का चिह्न है, क्योंकि जो उसमें भाग लेते हैं, वे मसीह के शिष्य के रूप में पहचाने जाते हैं। लेकिन संभवतः मसीही होने का सबसे महत्वपूर्ण "चिह्न" यह है कि हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं (यूहन्ना 13:34, 35)।

समाप्ति नोट्स

[1]आर. एलेन कोल, *एक्सोडस: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, Ill.: इंटर-वार्सिटी प्रेस, 1973), 210. [2]एस. आर. ड्राइवर, *द बुक आफ एक्सोडस,* द केम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एण्ड कॉलेजेज (केम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रेस, 1953), 342. [3]जे. फिलिप ह्यात, *एक्सोडस,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1971), 297. [4]जॉन आई. दुरहैम, *एक्सोडस,* वर्ड विब्लिकल कमेंट्री, खण्ड 3

(वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1987), 412. [5]अम्बरटो कैसुटो, *ए कमेंट्री आन द बुक आफ एक्सोडस,* अनुवादक इस्राएल अब्राहम्स (यरूशलेमः मैगनस प्रेस, 1997), 403. [6]दुरहैम, 413. [7]केसुटो, 405-6. [8]विल्बर फील्डस, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोपलिं, मो: कॉलेज प्रैस, 1976), 699-700. इसके साथ ही, भजन 8:3 यह बताता है कि कायनात परमेश्वर की "उंगली " से रचा गया है। निर्गमन 8:19 जादूगरों ने कहा कि "परमेश्वर की उंगली" से आश्चर्यकर्म किया जा रहा है। (लूका 11:20 में भी देखें।)